भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 3	सोमवार, 26.3.2001	वार्षिक चंदा : 50.00

अहोहो ! फिर आया अनमोल अवसर—गुरुजयंती का !

गुरुजयंती यानि–

– शिष्यों के लिए गुरुभक्ति अदा करने का दिन...
– मन, कर्म, वचन से निर्दोषबुद्धि एवं सुहृदभाव रखते हुए सेवा करने कृतनिश्चयी होने का दिन...
– अपने दोष-गल्तियों को दिल से कबूल करके स्वयं को बदल कर वर्तने की प्रार्थना करने का दिन...
– प्रार्थना करके गुरु को प्रसन्न करने का दिन...
– गुरु को सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, निर्दोष मान कर कल्याणकारी गुण बख़्शिश में पाने का दिन...

इन सारी बातों की गहराई-मर्म वही मुमुक्षु समझ सकता है जिसके जीवन के केन्द्र में भगवान धारक विभूति ने स्थान लिया होगा !

हम सब कितने भाग्यशाली हैं कि प्रभुस्वरुप प.पू. काकाजी महाराज ने हमें प.पू. गुरुजी जैसी अखंड प्रभुधारक विभूति की भेंट दे दी...

हर एक के दुःख में आधी रात को भी खड़े रह कर हौंसला देने वाले-बल देने वाले व हमारी आत्मा के सच्चे हितैषी–एक विरल संतविभूति वात्सल्यमूर्ति यानि– प.पू. गुरुजी !

इनके दर्शनमात्र से हमें जन्मों का अपनापन लगने लगता है !

इनके सान्निध्य में आत्मा की प्यास बुझती है, शंकाएँ मिट जाती हैं; जीवन की मुश्किलों से लड़ने का अमाप बल मिलता है, मन को शांति मिलती है।

प्रथम दर्शन में ही वे सीधे हमारे दिलोदिमाग पर अधिकार कर लेते हैं...

समाज को शुद्ध व पवित्र रखने के लिए भगवान के अखंड धारक सच्चे संत की आज खूब जरुरत है। जीवन के कुरुक्षेत्र का अंत लाने समर्थ सारथी की अत्यधिक जरुरत है... पर, जैसे मनुष्य देह मिलना मुश्किल है, वैसे ही ऐसे संत मिलने भी दुर्लभ हैं। लोग सुख के लिए लंडन-अमेरिका जाते हैं, पर सुख व शांति केवल सच्चे संत की शरण में है।

हमारी संस्कृति कहती है कि गुरु यानि–'ब्रह्मा'। ब्रह्माजी यानि एक अद्वितीय सर्जक ! सच्चा संत एक अनुपम सर्जक है जो हमारे भीतर की सारी गंदगी साफ करके चैतन्य मंदिर का निर्माण करता है। सच्चा संत हमारे इह लोक व परलोक दोनों को सुधारता है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरु ब्रह्मा हैं अर्थात्– गुरु ही सर्जक हैं,
गुरु विष्णु हैं अर्थात्– गुरु ही पोषक हैं,
गुरु महेश्वर हैं अर्थात्– गुरु ही प्रलयकर्ता हैं,
और
गुरु में साक्षात् परब्रह्म अखंड रहे हैं।

जैसे चंदन खुद घिस कर दूसरों को खुश्बू देता है, वैसे ही आज प.पू. गुरुजी का जीवनकार्य है ! वे जो कुछ बोलते हैं, वो उनके आचरण में हम स्पष्ट देख सकते हैं। प.पू. गुरुजी का आचरण, उनकी हर छोटी-बड़ी क्रिया ही उनका संदेश है, महिमा का दर्शन है।

हजारों के हृदयाकाश में भगवान के प्रति श्रद्धा के दीप प्रगटाने प.पू. गुरुजी का प्रागट्य है और... जीवन का सच्चा

मर्म समझाने, सर्वथा उत्कर्ष करने शाश्वत् शांति की ओर ले जाने इनका अविरत परिश्रम है...

करुणामूर्ति बन कर आबाल, वृद्ध, युवकों सभी पर वे अपनी निःस्वार्थ करुणा लुटा रहे हैं... जैसे कि–एक बार स्कीम निकाली कि जो बच्चे 75 प्रतिशत से ऊपर मार्क्स लाएंगे उन्हें प्राईस दिया जाएगा। दूसरी बार स्कीम निकाली कि जो जेठानी-देवरानी मिलजुल कर घर में एक-दूसरे का सहन करके सगी बहनों जैसी बन कर रहेंगी उन्हें प्राईस दिया जाएगा। तीसरी बार स्कीम निकाली कि जो पति-पत्नी ३६ के आँकड़े की तरह अलग-अलग मूड रख कर नहीं, बल्कि ६३ के आँकड़े की तरह आमने-सामने एक-दूसरे का प्रेम से स्वीकार करके रहेंगे उन्हें प्राईस दिया जाएगा। यूं वे हमारे विष खेल-खेल में सहज चूस लेते हैं।

यूं दिल्ली में प.पू. काकाजी के वचन को झेल कर उन्होंने श्री अक्षरपुरुषोत्तम की प्रगट की उपासना प्रवर्ताई व धर्म, ज्ञान, वैराग्य-भक्ति युक्त एक आत्मीय समाज का पोषण कर रहे हैं।

वचनामृत गढडा प्रथम 37 में भी श्रीजी महाराज ने लिखा है कि–

ऐसी निष्ठा वाले जो संत हैं उनके पैरों की धूल को तो हम भी माथे पर चढ़ाते हैं और उन्हें दुःख देते हुए हिचकते हैं तथा उनके दर्शन की इच्छा करते हैं... उनके दर्शन तो भगवान के दर्शन तुल्य हैं...

प.पू. गुरुजी के पास प्रभु हैं वह तो उनकी उच्च आध्यात्मिक अवस्था है ही। पर, सामान्य दृष्टि से देखें तो भी उनको भीतर में किसी भी प्रकार की कोई लालच नहीं है। केवल एक देने की ही भावना–किसी भी प्रकार से प्रभु का संबंध करा देने की भावना है... उनका यह निःस्वार्थभाव संबंध में आए हर एक को इतना अधिक स्पर्श कर जाता है कि उनके मुँह से निकल जाता है– **'यह साधु कुछ अलग है।'**

मंदिर में **प.भ. पुरी साहेब** आते हैं जिन्होंने बहुत ही अल्प समय में प.पू. गुरुजी के साथ एक संबंध दृढ़ कर लिया है। वे किसी भी मंदिर में नहीं जाते थे; यहां तक कि उनकी पत्नी के साथ जाना भी पड़े, तो उनकी पत्नी मंदिर में दर्शन करने जातीं और वे बाहर ही खड़े रहते ! लेकिन... आज प.भ. पुरी साहब के जीवन में भगवान व संत ही प्रथम स्थान पर हैं, प.पू. गुरुजी ही उनका केन्द्रबिन्दु हैं। भगवान के संबंध से, भगवान के बल से, भगवान को आगे रख कर मुक्तों के आत्मीय बन कर वे एक सुखी जीवन जी रहे हैं। यूं, मूर्तिपूजा में नहीं मानने वाले कई व्यक्तियों को प.पू. गुरुजी पाँच फुट की मूर्ति में प्रभु का निवास मनवा कर– अनुभव करा कर निश्चय करा देते हैं।

सच में, प.पू. गुरुजी केवल भगवान में ही अखंड रहते हैं... बाईपास सर्जरी की बेहोशी में वे गुरुहरि प.पू. बापा के साथ विचरण में रहे... पुराने मंदिरों के दर्शन कर रहे थे... बेहोशी में से वापिस आते ही उन्होंने सारे दर्शन की बात करी। सच! ऐसे संत में भगवान अखंड निवास करके रहेंगे ही।

वच. गढडा प्रथम 27 में लिखा है कि–

...इनके नेत्र में देखने वाला भगवान है, इनके पांव द्वारा स्वयं भगवान चलते हैं। ऐसे संत की सभी इन्द्रियों में भगवान रहे हैं। प.पू. गुरुजी के रुप में हमें ऐसे समर्थ संत मिले हैं। **हम परोक्ष में श्रद्धा रखते हैं, लेकिन ऐसे प्रत्यक्ष स्वरुप में श्रद्धा से चिपके रहना ही मानव जीवन की सार्थकता है।**

ऐसे सच्चे संत की दया हमारी देह पर नहीं, बल्कि जीव पर होती है। हमें कई बार प्रश्न उठता है कि हमारी बीमारी महाराज क्यों ठीक नहीं कर रहे हैं या हमारी यह प्रॉब्लम सुलझा क्यों नहीं रहे ? पर... यह बात बहुत गहराई की है, जो मुमुक्षु जीव ही समझ पाएंगे।

अपने निःस्वार्थ वात्सल्य-स्नेह से आज प.पू. गुरुजी अनेकों को संभाल रहे हैं। इनका हृदय मक्खन से भी कोमल है... किसी का भी दुःख नहीं देख सकते... किसी की आँख में पानी आए उससे पहले तो उनकी आँखे गीली हो जाती हैं। ऐसे मार्मिक मुख का हम में से अनेकों ने दर्शन किया है।

यूं देखने में प.पू. गुरुजी हमें अपने जैसे सामान्य दिखाई पड़ते हैं। पर, यदि वे अधिक महान बन कर आते तो हम उनमें प्रीति से जुड़ नहीं पाते। हमें उनके साथ प्रीति हो जाए, सो वे हमारे जैसे ही सामान्य बन कर आए हैं। सभी के लेवल पर आकर प.पू. गुरुजी रसबस होते हैं। छोटे-बड़े हर एक के जीवन में अपनी निराली रीत से उन्होंने स्थान लिया है।

प.भ. प्रकाशभाई ठक्कर के साले 31 वर्ष की छोटी आयु में ही कैंसर की बीमारी से अक्षरवासी हो गए। प.भ. प्रकाशभाई की पत्नी सौ. निर्मलाभाभी को प.पू. गुरुजी के प्रति बहुत लगाव है। पहली बार ही उनके भाई को देखते ही प.पू. गुरुजी ने इशारे में प.भ. प्रकाशभाई को उनके ना बचने बारे कह दिया था। जबकि तब तक डॉक्टरों ने भी कुछ कहा नहीं था। सौ. निर्मलाभाभी की माँ और भाई दोनों–15 दिन के अंदर ही अक्षरवासी हो गए... सौ. निर्मलाभाभी खूब टूट गए थे। लेकिन, प.पू. गुरुजी ने सिर्फ एक ही बात कहलवाई कि **हमें तो भगवान और संत का प्रगट संबंध है। हम भी यूं रोयें, तो फिर हम में और दूसरों में–जिन्हें ऐसा**

संबंध नहीं है उनमें क्या फर्क ? यह सुन कर ही वे स्वस्थ हो गए ! यूं प.पू. गुरुजी आज हर एक के सुख-दुःख के साथी बने हैं। सो ही रात को 12:00 बजे भी कोई कष्ट आने पर इनसे जुड़े मुक्त इन्हें फोन करने हिचकते नहीं... हर एक जीवन में आज इन्होंने ऐसा स्थान लिया है।

प.पू. गुरुजी स्थूल लेवल पर हमारी देह तक का ख्याल रखते हैं। पिछले वर्ष अगस्त के महिने में दिल्ली में वायरल का दौर चला... प.पू. गुरुजी दर्शनार्थी सभी भक्तों को करीब 15 दिन तक 'सुदर्शन घनवटी' दवाई देते रहे और.... रक्षाबंधन के दिन तो करीब 500-600 हरिभक्तों को प्रसाद के रुप में यह दवाई ही दी ! करीब 3000 रुपये की यह दवाई प.भ. प्रभाकरभाई से मँगाई थी... कौन हमारी ऐसी चिन्ता करेगा ?

प.पू. गुरुजी को किसी से कोई अपेक्षा नहीं। वे स्नेह और सरलता से दिलों को जीत कर उन पर राज कर रहे हैं- प्रभु में जोड़ रहे हैं। और... संबंध में आए हर एक मुक्तों की महिमा समझ कर सहायभूत होने आधी रात को भी तैयार रहते हैं। **लुधियाना के प.भ. गुप्ताजी** का काफी बड़ा एक्सीडेन्ट होने पर उनकी पत्नी सौ. ऊषा भाभी भीतर से प.पू. गुरुजी को याद करके प्रार्थना कर रहे थे... और उधर प.पू. गुरुजी प.भ. गुप्ताजी की तबियत देखने पहुँच ही गए ! प.भ. गुप्ताजी का परिवार आज भी यह बात दिल से मानता है कि प.पू. गुरुजी की कृपा से उन्हें नया जीवन मिला है...

प.पू. गुरुजी की भक्तवत्सलता का एक अन्य प्रसंग निहारें... वापी से प.भ. भाविनभाई के साले **प.भ. ज्योतिनभाई** अभी पिछले करीब दो-तीन साल पहले ही प.पू. गुरुजी के संबंध में आए और अत्यधिक प्रीति से जुड़ गए... जनवरी में प.पू. गुरुजी का अमदावाद, राजकोट, मोरबी वगैरह जगह विचरण का प्रोग्राम था। तब प.पू. गुरुजी ने उन्हें ड्राईविंग की सेवा के लिए बुलाया...प.भ. ज्योतिनभाई को इन दिनों पेट के दर्द की खूब तकलीफ चल रही थी और डॉक्टर ने भी उन्हें ड्राईविंग करने को मना करा था। पर, प.पू. गुरुजी का वचन झेल कर प.भ. ज्योतिनभाई अमदावाद आए और विचरण में गए... राजकोट में उन्हें पेट दर्द हुआ, तो उन्होंने खाना खाने के लिए मना कर दी। प.पू. गुरुजी को इस बारे कुछ पता नहीं था। प.पू. गुरुजी ने अचानक प.भ. ज्योतिनभाई को बुलाया और बाजरे की रोटी, भरथा, मिर्च, मक्खन आदि का प्रसाद दिया। प.भ. ज्योतिनभाई ने पेट के दर्द की परवाह किए बिना खूब अहोभाव-महिमा से प्रसाद खाया। आश्चर्य की बात यह हुई कि जो पेट दर्द करीब दो महिने से ठीक नहीं हो रहा था, वो गायब जैसा ही हो गया ! इसके बाद प.पू. गुरुजी ने अन्य पधरामनियों में प.भ. ज्योतिनभाई को लगातार आईसक्रीम का प्रसाद खिलाया। सच है कि **गुरु के वचन में ही जीवन की सच्ची रक्षा-सलामती है और मन की शांति भी उसी में है।**

और... जागृत की बात तो अलग, पर करुणामूर्ति प.पू. गुरुजी भक्तों को स्वप्न में जाकर भी सहायता करने चूकते नहीं... मंदिर में **प.भ. वेदप्रकाशजी** (मोना टी वाले) आते हैं... उनकी पीठ में काफी दिनों से दर्द था। सो, उन्हें प.भ. प्रभाकरभाई से 'एक्यूप्रेशर' कराना था। पर, उन दिनों प.भ. प्रभाकरभाई प.पू. गुरुजी के हार्ट ऑप्रेशन के कारण उनकी सेवा में मुंबई थे। तो प.पू. गुरुजी उनके सपने में प.भ. प्रभाकरभाई को लेकर गए और सपने में ही प.भ. प्रभाकरभाई से उनको एक्यूप्रेशर की ट्रिटमेन्ट दिलवाई... आश्चर्य की बात कि सुबह तो सच में उनका दर्द गायब था ! दूसरे दिन वे ठाकुरजी को धन्यवाद देने मंदिर आए... यूं अनेकों के जीवन में केवल प्रेम देकर उनकी मुश्किलें दूर करके प.पू. गुरुजी सहज परिवर्तन ला रहे हैं। **उनके प्रेम में आग्रह नहीं, रोक-टोक नहीं, केवल एक मात्र सुखी करने की भावना की अभिव्यक्ति...**

अपनी सामर्थी से जीवन के शाश्वत् मूल्यों का पोषण भी प.पू. गुरुजी कर रहे हैं। सूरत से **प.भ. सुरेशभाई** आए थे। उन्होंने प.पू. गुरुजी के एक बार कहने से गुटका खाना छोड़ दिया ! उनके आस पास वाले–यहाँ तक उनके खुद के पुत्र भी आश्चर्य में हैं कि इतना गुटका खा जाने वाले ने यह व्यसन कैसे छोड़ दिया ?

सच ! अगर हम अपना मन-बुद्धि छोड़ कर भगवान रखे साधु के अल्प वचन को मानते हैं तो प्रभु हमें कैसा अनुभव कराते हैं, उसका निम्न छोटे प्रसंग से स्पष्ट दर्शन होता है। **प.भ. मोतीलाल बाजवानजी** की छोटी बेटी शैली की बारहवीं कक्षा की परीक्षा चल रही थी... एक दिन उसे प्रेकटिकल के लिए जाना था और वह मंदिर दर्शन करने आई... जैसे कि आजकल स्कूलों में बच्चे स्टाईल मारने टाई ढीली पहन कर जाते हैं, वैसे ही उसने पहनी हुई थी। प.पू. गुरुजी ने सेवक से कहलवाया कि टाई ऐसे थोड़े पहनते हैं, इसे टाईट करके टाई पहनने कहो। उसने प.पू. गुरुजी का वचन मान कर टाई टाईट करके पहन ली। स्कूल में जब उसकी बारी आई तो टीचर उससे खूब प्रभावित हो गई कि यह कितनी अनुशासित लड़की है कि टाई टाईट पहनती है। आजकल के अन्य बच्चों की तरह नहीं है और... उसने शैली से बिलकुल आसान प्रश्न पूछे व मार्क्स भी ज्यादा दिए।

प.पू. गुरुजी को जब यह बात बताई तो प.पू. गुरुजी सहज ही बोले कि अगर **हम संत के कहे अनुसार ऐसे ही**

चलते रहेंगे तो हमें साधना करने के लिए कोई एक्सरसाईज़ नहीं करनी पड़ेगी...सच ! गुरु के वचन में ही साधना की सरलता है और पूर्णाहुति भी उसी में है–यह बात यहाँ चरितार्थ होती है।

प.पू. गुरुजी को बिलकुल व्यवस्थित काम ही पसंद है। वे ज़रा भी टेढ़ा-मेढ़ा चला नहीं पाते... गुणातीत स्वरुपों के लिए हम हार बनाते हैं जो कि सिर्फ दो सैकण्ड के लिए ही पहनाना होता है। तब भी गले पर आने वाली पतली डोरी या पीछे की ओर गत्ता जो लगा होता है, वह प.पू. गुरुजी को पसंद नहीं आता था कि यह अपनी भक्ति नहीं... उन्होंने गत्ते पर मुलायम फोम लगवानी शुरु करवाई और गले वाली पतली डोरी की जगह साटीन के कपड़े में मुलायम रुई भरवा कर एकदम नरम बनवाया... कैसा भक्तिभरा दिल ! **बुद्धि और दिल दोनों का समन्वय देखने को इनमें मिलता है।**

प.पू. गुरुजी का यह पक्का मानना है कि अगर हम भगवान की मूर्ति में सीन्सियरली रहेंगे तो प्रभु सामने से सेवकों को एवं निष्ठा वाले मुक्तों को उनके श्रेय के लिए भेज ही देंगे। अभी-अभी 13 मार्च की सुबह मंदिर में हम सब भजन-धून्य कर रहे थे। इतने में रोहिणी से एक भाई साहेब– **श्री राजीवजी** आए। उन्होंने बताया कि मैं बाहर **'स्वामिनाराण मार्ग'** से जा रहा था कि मेरी नज़र श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर के बोर्ड पर गई। वो नाम पढ़ते ही मेरे भीतर हुआ कि मुझे इस मंदिर में दर्शन करने जाना है... और इस तरह मैं दर्शन करने चला आया। प.पू. गुरुजी से मिल कर वे बहुत ही प्रभावित हुए और उसी समय उन्होंने प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन होने के कारण गुरुमहिमा व बधाई का भजन गाया,.. उनके वर्तन से लग ही नहीं रहा था कि वे आज पहली बार ही आए हैं... पूर्व के पुराने परिचित लग रहे थे। यहां हम सब को प.पू. काकाजी के आशीर्वाद वचन याद आए कि– **'निष्ठा वाले मुक्तों तुम्हें मिल जाएंगे !'**

प.पू.गुरुजी में दंभ नहीं-आडंबर नहीं, दिखावा नहीं। जो उनके दिल में है वही बाहर बोलते दिखाई पड़ते हैं। वे बनावट नहीं कर सकते-लीपापोती नहीं कर सकते। तभी तो कई बार उनकी स्पष्टवादिता-निखालसता को–यहां तक कि हम निजी भी गलत समझ लेते हैं... पर, यही शायद प.पू. गुरुजी की असली गुणातीत स्थिति है !

प.पू. गुरुजी जो कुछ बोलते हैं वो उनके आचरण में हम स्पष्ट देख सकते हैं। एक बार शिकागो से पू. दिनकरभाई का फोन आया... बातचीत करीब 12-15 मिनिट चली होगी। तो, एकदम प.पू.गुरुजी बोले कि 'लोंग डिस्टेन्स कॉल है, काका डांटेंगे–सो फोन रख रहा हूँ...'। हम सब वहां बैठे थे, तो हमें लगा कि प.पू. गुरुजी को प.पू. काकाजी की अखंड हाज़िरी का कितना अनुसंधान रहता होगा कि– अब भी वे सतर्क हैं कि प.पू. काकाजी को यह पसंद नहीं है। प.पू. काकाजी जब स्थूल रुप से थे, तब लोंग डिस्टेन्स फोन पर किसी का लम्बी बात करना उन्हें पसंद नहीं था।

दूसरी ओर– हम संत के पास कूड़े जैसी चीज़े माँगते हैं। पर, उन्हें जो हमें देना है वह हम लेते नहीं। फिर भी पल-पल वे अपनी क्रिया एवं बातों से हमारा मार्गदर्शन इस बारे भी करते रहते हैं। एक बार संक्रांति के दिन पू. दिनकरभाई का फोन आया तो प.पू. गुरुजी बोले कि दिनकरभाई ! मकर संक्रांति की भिक्षा देना... और कहा कि आपके जैसे गुण भिक्षा में देना... एक बार ऐसे ही अपने जन्मदिन निमित्त प.पू. साहेब से फोन पर बात करते हुए उनसे मांगा कि– आप जैसा सहज जीवन जीते हो जाएं ! जिन्हें बड़े माने हैं उनके पास प.पू. गुरुजी कैसा स्वामी सेवकभाव रखते हैं और हमारे में कुछ बरकत नहीं होती तब भी अपने आपको खूब बड़ा समझ कर अपनी हुशियारी में से ही बाहर नहीं आते। जबकि कल्याणकारी गुण तो ऐसी गरज रख कर, सरलता रखेंगे तब ही मिलेंगे...

प.पू.गुरुजी जहाँ एक ओर भक्तों के प्रति आत्मीयता, निखालिसता, स्पष्टवादिता जैसे अनेक कल्याणकारी गुणों के धारक हैं वहीं दूसरी ओर 'गुणातीत साधुता' के भी मालिक हैं। वह इस प्रसंग से निहारें...

पाँच-छः महिने पहले एक भाई साहेब मंदिर आए... उनके जाने के बाद पता चला कि प.पू. गुरुजी की पेन नहीं मिल रही। बहुत ढूंढने के बाद भी पेन नहीं मिली तो सभी ने अंदाजा लगाया कि वे भाई साहेब ही शायद पेन ले गए हैं... थोड़े दिन के बाद प.पू. गुरुजी संयोगवश उन्हीं भाई साहेब के घर गए, तो कमरे में वहां टेबल पर वही पेन रखी थी... सेवक ने वो पेन लेनी चाही, पर प.पू. गुरुजी ने सेवक को मना कर दिया और उल्टा उनके घर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज व प.पू. काकाजी की मूर्ति वाला चांदी का सिक्का दे आए ! सेवक लोग तो प.पू. गुरुजी की ओर आश्चर्य से देखते ही रह गए...

सच में प.पू. काकाजी ने उत्तरभारत के मुक्तों को प.पू. गुरुजी जैसे संत देकर निहाल-निहाल कर दिया है। पर, हमारी किसी नादानी, भोलेपन-गफलत एवं चतुराई के कारण यह संबंध हम गवां ना दें... अपने मन-स्वभाव की गली-गलियारों में घूमते रह कर अपना रास्ता लम्बा ना कर लें...

'स्वामिनारायण' महामंत्र का मंगलकारी वर्ष चल रहा है। चारों तरफ स्वामिनारायण मंत्र का लेखन जोर-शोर से चल रहा है... 21वीं सदी में भक्ति का सुवर्ण युग चल रहा है... तो–हे गुरुजी !

'प्रथम प्रभु फिर कदम उठाना...'

यह हमारा जीवन सूत्र बने और आपके स्वरुप की तत्त्व से आप हमें पहचान कराना।

प.पू. पप्पाजी के शब्दों में–'आप प.पू. काकाजी के अखंड धारक बने हो।' प.पू. काकाजी जैसे कल्याणकारी गुण पाकर उनकी पहचान बने हो, तो हम आपको पाएं...आपको कोई भी एक बार मिलता है तो उसे होता है कि अहोहो इनके गुरु– काकाजी कैसे होंगे ! वैसे ही हम आपका परिचय बन पाएं...

आपके प्रति हमारी श्रद्धा, भक्ति, विश्वास दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही रहे।

भक्तों में अंदर ही अंदर आपस में आत्मबुद्धि व प्रीति बढ़े–जो आपको खूब पसंद है... जिससे आपको धरती पर लंबे अरसे तक रहने का मन हो !

हम ऐसे सच्चे साधु बनें...होंठ और हृदय सदा हंसता रखें...

हृदय को काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, वासना जैसी गंदगियों से दूर रखें, ताकि आपको हमारे हृदय सिंहासन पर बैठने का मन हो और हम मन, कर्म, वचन से आपके होकर रहें...

हमारा आंतर और बाह्य जीवन एक बने ! आपके ही अभिप्राय की भक्ति हो।

और... अंत में–हे गुरुजी ! हमारे गुण, दोष देखे बिना आपने हम पर जो विश्वास रख कर हमें आपकी योजना में भागीदार बनाया है, उसके लिए हम योग्य बनें ऐसा बल देना।

हे गुरुजी ! आप हमारे जीवन में आए पर अब हम ऐसा वर्तन करें कि आपके अंतर की प्रसन्नता मिले यही आपकी इस जन्म जयंती पर नतमस्तक प्रार्थना !

✡✡✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

26 जनवरी की सुबह आए भूकंप से हुए भयंकर विनाश से हम सभी परिचित हैं... आप सभी को यह जान कर राहत होगी कि भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत स्वरुपों की अपार दया-करुणा से गुजरात में रह रहे हमारे सभी निष्ठा वाले मुक्तों की हर प्रकार से रक्षा हुई है।

श्रीजी महाराज ने वचनामृत में आशीर्वाद दिये हैं कि– **'मुश्किल में हरी घास को दण्डवत् करना, उसमें रह कर भी मैं रक्षा करुँगा...'** (स्वा. बात प्र-2,155) इस वरदान के फलस्वरुप सभी भक्त सकुशल हैं।

पर, ताश के पत्तों की तरह बिल्डिंग्स गिरते हुए जिन्होंने अपनी आँखों से देखी, वह दृश्य सभी की चित्तपट्टी पर जम गया और हल्के-हल्के जो झटके अभी तक आते रहते हैं, उससे सभी दहशत में थे।

प.पू. गुरुजी ने जब से भूकंप से हुए जान माल आदि के नुकसान को टी.वी. पर देखा था, तब से फोन पर तो सभी हरिभक्तों की फिक्र करके कुशल-क्षेम पूछ ही रहे थे। पर, तब भी उनके मन में था कि गुजरात में हम से जुड़े मुक्तों को चाहे दो दिन भी जाकर मिल आऊँ...

भूकंप दौरान अमदावाद में रह रहे प.भ. भाविनभाई-प.भ. समीरभाई के पुराने घर में दरारें आ गई थी। सो, हमारे आत्मीय स्वजन **प.भ. एन. जी. पटेल साहेब** ने उन्हें रहने के लिए **'बागेश्री'** एपार्टमेन्ट में अपना एक फ्लैट दिया... प.भ. एन. जी. पटेल साहेब द्वारा एन मौके पर करी गई आत्मीयता व अपनेपन की सेवा से प.पू. गुरुजी ने बहुत प्रसन्नता बताई... प.भ. पटेल साहेब ने 'बागेश्री' में सब भक्तों के रहने की सुविधा के लिए दो फ्लैट्स और भी खुलवा दिए थे। **प.भ. निरंजनभाई, प.भ. भाविनभाई, प.भ. समीरभाई** की खूब दिली इच्छा थी कि प.पू. गुरुजी पहले इनके फ्लैट में आकर भजन कर जाएँ... उनकी प्रार्थना स्वीकार करके गुजरात में जुड़े अपने मुक्तों को हुँफ-सांत्वना, बल-दिलासा देने 22 फरवरी की शाम को प.पू. गुरुजी अमदावाद जाने निकले।

23 फरवरी की सुबह अमदावाद पहुँचे... गुजरात (अमदावाद) के हरिभक्तों की खुशी का ठिकाना नहीं था... मानो प.पू. गुरुजी का दर्शन करके वे पूरे एक महिने का डर-गम-दहशत भूल जैसे गए ! राजकोट, वापी, भरुच, मुंबई, सुरत आदि के प.पू. गुरुजी से जुड़े मुक्त अमदावाद में प.पू. गुरुजी के दर्शन, सेवा, समागम के लिए बागेश्री के तीनों फ्लैट्स में एक जगह ही इकट्ठे हो गए थे। प.पू. गुरुजी ने भी दो दिन की शिविर जैसी सेटिंग करके सभी को बल की बातें करके फ्रेश कर दिया। प.पू. गुरुजी ने अपनी बातों के दौरान बताया कि–

मुझे जो भूस्तर ज्ञान है उस हिसाब से अब अगले 50 साल तक इस क्षेत्र में ऐसा भूकंप के आने की संभावना नहीं। और... वैसे भी गीता में भगवान ने आशीर्वाद दे दिए हैं कि–

'मेरे भक्त का नाश नहीं होगा। इस बात का रहस्य यह है कि जिन्हें भगवान और संत की प्रगट की दृढ़ निष्ठा है, उनकी हमेशा हर प्रकार से प्रभु रक्षा करेंगे, करेंगे और करेंगे ही। सो निश्चिंत होकर भजन करते रहना...।'

सच ! बड़े पुरुषों के वचन में एक अद्भुत ताकत होती है। तभी तो उनकी बातें-शब्द मुक्तों को भीतर तक छू जाते

हैं। प.पू. गुरुजी की इस बात ने सभी को बहुत ही बल दिया, राहत दी, निश्चिंतता दी।

प.भ. भविनभाई के साढु प.भ. हर्षदभाई व्यास भूकंप के बाद पिछले एक महिने से घर में ना सोकर बाहर रोड पर ही सो रहे थे... उनकी चित्तपट्टी पर डर की काई-सी जम गई थी। प.पू. गुरुजी के पास वे फूट-फूट कर रोए... प.पू. गुरुजी खास उनके घर पर भजन करने गए और भजन करके उन्हें अपनी माला देकर शांति-शांति कर दी।

24 फरवरी को हिन्दी तिथि के मुताबिक अपना जन्मदिन होने के कारण प.पू. गुरुजी 23 फरवरी-दोपहर को ठाकुरजी का थाल करके **विद्यानगर प.पू. पप्पाजी** से आशीर्वाद लेने निकल गए। वहां पू. रतिभाई का हार्ट ऑप्रेशन होने के कारण पहले 'ब्रह्मज्योति' पर गए और... प.पू. काकाजी, प.पू. बा की ब्रह्मसमाधि के दर्शन करके प.पू. साहेब, पू. रतिभाई से मिल कर प.पू. पप्पाजी के पास आशीर्वाद लेने गए और 'प्रभुकृपा' में रात का प्रसाद लेकर अमदावाद वापिस लौटे।

24 फरवरी की शाम को प.पू. गुरुजी की हिन्दी तिथि के मुताबिक जयंती होने के कारण प.पू. गुरुजी से जुड़े अमदावाद के मुट्ठीभर मुक्तों ने एक छोटी सभा का आयोजन किया था। अमदावाद के भक्तों को यह अनमोल मौका पहली बार मिला था। सो, सभी भक्तों बहुत हर्षोल्लास में थे। पू. पकाई साहेब, पू. निरंजनभाई, पू. कनुमामा (प.भ. भाविनभाई-समीरभाई के मामा), पू. बाजवानजी, पू. असितभाई आदि सभी ने अपने अनुभव बताए... पू. पकाई साहेब ने बताया कि–

'मैंने 30 साल पहले जब पहली बार प.पू. गुरुजी के दर्शन किए तभी मुझे लगा था कि यह साधु कुछ अलग है। उन्होंने बताया कि प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी को अखंड रखा है-ऐसा मेरा अनुभव है... और वे सौ साल तक इस धरती पर रह कर इसी प्रकार हमें दर्शन व बातों का सुख देते रहें...'

पू. निरंजनभाई दवे ने अनुभव दर्शन कराते हुए कहा– 'जिस समय भूकंप आया तो हमारा सारा परिवार आँखें बंद करके प.पू. गुरुजी की मूर्ति के पास धून्य करने खड़ा हो गया... उस दौरान मुझे ऐसा अहसास हुआ कि प.पू. गुरुजी की मूर्ति में से एक दीपक की ज्योति जैसी निकली। फिर उस ज्योति ने सफ़ेद प्रकाश का पट्टा बनाया और हमारी फेमिली को चारों तरफ से जैसे एक घेरे में घेर लिया... मानो पूरा एक रक्षा कवच जैसा बन गया हो ! हमारी बिल्डिंग को देखते हुए यह बात पक्की है कि प.पू. गुरुजी ने ही इस बड़ी विपत्ति से हमारी रक्षा करी है।'

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने आशिष वर्षा करते हुए कहा कि स्वामी की बातों में है कि–

'भगवान उनके भक्त की रक्षा करने ही बैठे हैं। किस प्रकार ? तो, जैसे पलकें आँख की रक्षा करती हैं और राजा प्रजा की रक्षा में है-वैसे ही भगवान हमारी रक्षा में हैं (स्वा. बात प्र-1,22)। सो, जिसे भगवान व संत का आसरा है उसकी रक्षा पहले से होती आई है और होती रहेगी...'

24 फरवरी प.पू. गुरुजी की जयंती के इस उत्सव के लिए डेकोरेशन की सारी सेवा दिल्ली के **हमारे प.भ. राजुभाई शाह** के रिश्तेदार **प.भ. हेमेन्द्रभाई गांधी (गांधी एसोसीएट्स वाले)** ने करी और एक सर्वदेशीय सेवक का आदर्श प्रस्तुत किया...

यूं 25 व 26 की दोपहर तक भक्तों को आनंद करा के बल देकर प.पू. गुरुजी शाम की राजधानी द्वारा अमदावाद से निकल कर 27 की सुबह दिल्ली वापिस लौटे।

7 मार्च प.पू. काकाजी के स्वधामगमन दिन निमित्त 'ताड़देव' मंदिर में शाम को श्रीजी महाराज व गुणातीत स्वरुपों के दिव्य सान्निध्य में भजन संध्या रखी गई थी। आज श्रीजी महाराज कुछ अलग ही अलौकिक रुप धारण किए हुए थे, जिसका हर एक ने भीतर में अनुभव किया कि ताड़देव में प्रतिष्ठित यह मूर्तियाँ केवल पत्थर की नहीं बल्कि जीवंत हैं।

ऐसी अनुभूति अनेकों को हो चुकी है। अभी थोड़े दिन पहले **प.भ. अशोकजी (जगरांववाले)** के साथ कनेडा में रहने वाले उनके मित्र पहली बार ही दिल्ली मंदिर आए थे। उन्हें मंदिर में बहुत शांति मिली, तो उन्होंने ठाकुरजी की मूर्ति मांगी... जब उन्हें श्रीजी महाराज व गुणातीत स्वरुपों की मूर्तियाँ दी, तो करीब सात साल का उनका लड़का बोल उठा कि 'यह तो बोलती मूर्तियाँ हैं...'! हम सब तो यह बात सुनकर आश्चर्य में रह गए कि यह बच्चा तो कभी यहां आया तक नहीं, तो वह सत्संग की इतनी गहरी बात-गहरी भाषा इतनी छोटी उम्र में कैसे बोल सकता है ? पर, खूब धीरज से सोचने पर स्पष्ट ख्याल पड़ा कि यह बात खुद महाराज ने ही हमारे लिए उस बच्चे से बुलवाई है कि इतने अनुभव होने के बाद भी इस बात को हम क्यों नहीं मान पाते ? सो, प्रभु को बार-बार हमारे लिए ऐसा परिश्रम करना पड़ता है।

7 मार्च की शाम को बच्चों की बोर्ड आदि की परीक्षा होने के बावजूद करीब 300-350 हरिभक्त अपने प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी को श्रद्धांजली देने-भक्ति अदा करने आ पहुँचे... प.पू. काकाजी ने हर एक के जीवन में कैसा स्थान लिया होगा ना ! जो भी प.पू. काकाजी को एक बार भी मिला है उसकी चित्तपट्टी पर उस गुणातीत विभूति की लुभावनी मूर्ति हमेशा के लिए स्थापित हो गई है।

प.भ. विनोदजी (पंजाब), प.भ. राकेशभाई शाह, पू. निमित्तस्वामी आदि ने भजनों की ढाई घंटे की हारमाला से

सभी को प.पू. काकाजी की स्मृतियों में डुबो दिया... फिर सभी ने प्रसाद लिया और मंदिर से विदा हुए।

10 मार्च को हर बार की तरह अब की भी 'ताड़देव' मंदिर में पवित्रता व खुश्बू से मिश्रित चंदन से ही होली खेली गई... हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी को रंग-पानी के गुब्बारे आदि से होली खेलना पसंद नहीं है। पिछले चार-पाँच साल से इसी प्रकार चंदन से होली मनाते हैं और धीरे-धीरे ऐसी रीत से होली मनाने में हरिभक्तों की संख्या बढ़ रही है... जो भी एक बार मंदिर में होली की यह पवित्र रीत देखता है, उसे हमेशा के लिए पक्का हो जाता है कि ऐसे स्थानों में होली तो यूं ही खेलनी चाहिए–जैसी अशोकविहार मंदिर में खेलते हैं।

धूलेन्डी के दिन सुबह ही 9:00 बजे सब मंदिर के प्रांगण में इकट्ठे होने लगे। अब की बार संतों व भाईयों ने मिल कर परदे पर अलग-अलग रंगों से बहुत सुन्दर डिजाईन प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे बनाई थी। भावना यह थी कि हम सब अलग-अलग स्वभाव के यहां इकट्ठे हुए हैं, पर हम सब का आधार तो केवल आप हो। प.पू. गुरुजी के आसन के आस-पास गमलों में हरा, पीला, लाल, गुलाबी गुलाल सजाया था। ठाकुरजी के पास बड़े कटोरे में चंदन रखा हुआ था।

सर्वप्रथम पू. निमित्तस्वामी, प.भ. राकेशभाई ने स्वामिनारायण महामंत्र महिमा स्तवन व अ.म.मु. भगतजी महाराज का 'फगवा–महाबळवंत माया तमारी' गाया...

फिर प.पू. गुरुजी ने अ.म.मु. भगतजी महाराज के जीवन चरित्र में से दो-तीन प्रसंग समझाए। साधना की आसान करामात बता कर प.पू. गुरुजी ने आज की सभा में बहुत गहराई की बातें करी कि–

'...हम सब की चाहना जरुर होती है कि हम भगतजी महाराज जैसी ब्राह्मी स्थिति को पाएं। पर, भगतजी महाराज भारी कठिनाईयों में मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की तरफ नज़र रख कर जिए...अत्यधिक सेवा करके स्थूल देह का तो चूरा-चूरा किया, पर साथ ही साथ देहभाव-इज़्म आदि निजी कोई आदर्श नहीं रखा... युधिष्ठिर, भीष्म की तरह कोई प्रतिज्ञा, कोई ठहराव नहीं–जो कृष्ण कहें वह करना है। भगतजी महाराज जानते थे कि– महाराज का पूरा खज़ाना स्वामी के पास है। कुछ भी करके इन स्वामी को लूट लेना है। अगर ये स्वामी फिदा हो जाएं तो मैं निहाल हो जाऊँ...

...दूसरों के दोष जितने देखते रहेंगे, भगवान हमारे लिए ज्यादा कठिन प्रोसेस चालू कर देंगे। भगवान को मेहरबान रखने का सीधा-सादा उपाय यह है कि दूसरों का कुछ देखे बिना दिव्यभाव रख कर भक्तों की सेवा में खो जाएं... हम यहां कोई बड़प्पन पाने नहीं आए थे, बल्कि कोई अलग चीज़ यानि– भगवान की मूर्ति पाने आए हैं...

...भगतजी महाराज ने ठान रखी थी कि चाहे कुछ भी हो, सब कुछ लुटा कर-ठुकरा कर भी ये स्वामी को राजी कर लेना है। पर, उसके लिए मियां के चांद से चांद करना पड़ता है। भगतजी महाराज ने हर विपरीत संजोगों में भी यही माना कि भक्तों का स्वभाव नहीं देखना...

ऐसी समझदारी रखने वाले कुछ पाएंगे। कोई हमें डिस्टर्ब कर जाए, पर थोड़ी धीरज रख कर हम स्वामिनारायण मंत्र का जाप करा करें–जब तक हमारे मन का भूचाल शांत ना हो जाए तब तक !

...मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को हर एक काम के लिए केवल एक भगतजी महाराज ही नज़र आते कि और कोई नहीं करेगा, पर यह करेगा। संत को हमारा ऐसा भरोसा आ जाए कि इसे कह दूँगा तो काम हो ही जाएगा... ऐसों में अपना नम्बर लगाने की चाहना रहनी चाहिए... हम ईगो, प्रेसटीज़ ईश्यु, हठ, मान, ईर्ष्या छोड़ने आए हैं...'

अ.म.मु. भगतजी महाराज के प्रसंगों के बाद स्वामी की बात प्र.3 की 34वीं समझाई कि– **'हमें देख कर साधु के सीने में ठंडक हो, ऐसे कल्याणकारी गुण तभी पाएंगे यानि– ऐसे तभी बन पाएंगे, जब हम साधु को सर्वज्ञ, निर्दोष मानेंगे और उससे कोई परदा-अंतराय नहीं रखेंगे...'**

इस प्रकार सभी की आत्मा को आध्यात्मिकता के रंगों से भर कर सभी के मुँह पर चंदन लगा कर प.पू. गुरुजी ने होली के उत्सव को सम्पन्न किया। इसके पश्चात्...आनंद करते-करते सभी ने प्रसाद लेकर विदाई ली।

2 अप्रैल के महामंगलकारी दिन करुणानिधि सर्वावतारों के अवतारी श्री सहजानंदस्वामी की जन्मजयंती... अनेक भक्तों को सनाथ बनाने श्रीजी महाराज सर्वजनहिताय की उद्धात्त भावना से धरती पर प्रगटे ! इससे भी अधिक गुणातीत स्वरुपों द्वारा धरती पर अपने अखंड प्रकटीकरण का वरदान देकर मानवजाति को सनाथ किया।

श्रीजी महाराज ने धरती पर आकर सर्वोपरि शास्त्र, सर्वोपरि मंत्र, सर्वोपरि साधु की भेंट दी। तो, स्वामिनारायण महामंत्र की द्विशताब्दी के मंगल अवसर पर प्रार्थना करें कि हे महाराज ! आप हमारे लिए अक्षरधाम से धरती पर आए... हमें अपना संबंध देकर गुणातीत स्वरुपों द्वारा आपकी मूर्ति का सुख देकर अपना बनाया। तो, अब हमारी वृत्ति केवल आप में ही अखंड जुड़ी रहे और जीतेजी अक्षरधाम का सुख भोगते हो जाएं– ऐसा बल, बुद्धियोग आप देना।

✡✡✡✡✡

जय स्वामिनारायण !

✹

अहोहो ! फिर आया अनमोल अवसर – गुरुजयंती का !

तो आइये –

अब की बार **31 मार्च, शनिवार की सायं 6:0 से 9:**

हमारा दिव्य परिवार इकट्ठा होकर

प.पू. काकाजी महाराज के मानसपुत्र

भगवत्स्वरूप प.पू. गुरुजी की 64वीं जयंती पर

गुरुपूजन करके धून–भजन एवं सत्संग के लाभ से कृतार्थ हों

व

गुरुभक्ति अदा करें !

प्रसाद : रात्रि 9:15

स्थान : 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,

अशोक विहार - III, दिल्ली - 110 052

722 9327, 724 9327

व्रतोत्सवसूची

1) दि. 2.4.2001 सोमवार – रामनौमी, भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती, व्रत
2) दि. 4.4.2001 बुधवार – एकादशी, व्रत
3) दि. 6.4.2001 शुक्रवार – गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का दीक्षा दिन
4) दि.19.4.2001 गुरुवार – एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
C1-36/7, Rama Vihar, Delhi-81 Ph.: 5953681 P.P.
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12,Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393